राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

विश्व स्तर पर भारतीय रंगमंच की सही पहचान कराने के उद्देश्य से 'संगीत नाटक अकादमी' ने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की स्थापना की। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की सन 1959 में मण्डी हाउस, नयी दिल्ली में हुई। आज देशभर में इस संस्था के प्रशिक्षित रंगकर्मी फैलते जा रहे हैं। नागरिक मंच के विकास के लिए भी यह संस्था 'प्रशिक्षित निर्देशक' की शर्त को पूरी कर रही है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के प्रथम निदेशक विख्यात रंगशिल्पी निर्देशक इब्राहिम अल्काजी बने थे। लोगों का कहना है कि अल्काजी व्यक्ति नहीं संस्था थे, जिन्होंने पन्द्रह वर्ष की अनवरत साधना से एन.एस.डी. को वह दृष्टि प्रदान की, जिसके आधार पर यह राष्ट्रीय मान्यता और महत्ता हासिल कर सका। अतः अल्काजी पूर्णरूपेण समर्पित थे।

राष्ट्रीय शब्द को सार्थक करते हुए इस विद्यालय ने देशव्यापी स्तर पर अपने कार्य को फैलाया है। ओमशिवपुरी, नसीरुद्दीन शाह, राजबब्बर, ओमपुरी, कारन्त, विनायक प्रसन्ना, पंकज कपूर, रंजीत कपूर जैसी अनेक प्रतिभाएँ यहाँ से प्रशिक्षित होकर बाहर आई हैं। और अपना निरन्तर सहयोग संस्था को दे रही हैं।

रंगमंच को लेकर इस संस्था में जिस काम की शुरुआत हुई वह एक ऐसी तकनीकी क्रांति थी जिसने पहली बार नाटक को अखिल भारतीय स्तर पर विकसित और जीवन्त रंगमंच का व्यापक संदर्भ दिया। देश की नाट्य प्रतिभाएँ एकत्रित हुईं। भारतीय कलाओं के इतिहास में शायद पहली बार ही रंगमंच पर देश की विभिन्न भाषाओं, प्रान्तों, साहित्यों, अभिनेताओं, निर्देशकों, लेखकों और रंगकर्मियों की प्रतिभाएँ एकजुट हुईं। यहीं से इन प्रतिभाओं ने रंगमंच को एक दिशा देनी प्रारम्भ कर दी।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में इब्राहिम अल्काजी के सहयोग से हिन्दी के 'अंधायुग', 'आधे-अधूरे', 'आषाढ़ का एक दिन' और 'लहरों के राजहंस' नामक नाटकों की प्रस्तुतियाँ की गईं। कुछ सफल रूपान्तरों का प्रदर्शन भी किया, जिसमें 'मुद्राराक्षस' का 'आला

अफसर', रंजीत कपूर का 'बेगम का तकिया' और 'मुख्यमंत्री', हबीब तनवीर का 'आगरा बाजार' आदि प्रमुख हैं। भारतीय रंगमंच की तलाश और विशेषकर हिन्दी रंगमंच को एक महत्वपूर्ण ऊंचाई तक पहुंचाने का कार्य इस संस्था ने किया है। अभारतीय नाटकों में अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी, चीनी, जापानी आदि विविध भाषाओं के अनूदित नाटकों को उन्हीं की रंग-शैलियों में प्रस्तुत करने के अलावा हिंदी, संस्कृत, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बंगाली, तेलगू आदि के नाटकीय अनुवादों को अनेक रंग-शैलियों में प्रस्तुत करने का सफल श्रेय एन.एस.डी. को है। इस क्षेत्र एन.एस.डी. अद्वितीय कार्य कर रहा है।

इब्राहिम अल्काजी के बाद रंगशिल्पी ब.व कारन्त के आने पर 'विद्या सुन्दर', 'अंधेर नगरी' और 'मुद्राराक्षस' को नया जीवन मिला और 'छोटे सैयद बड़े सैयद' में नए प्रयोग हुए, जिसमें हमें ब.व कारन्त की प्रतिभा और क्षमता का परिचय प्राप्त होता है।

स्थापना के बाद से अबतक इस विद्यालय ने अनेक प्रसिद्ध नाटकों का सफल प्रदर्शन किया है, जिसमें प्रमुख हैं — 'पापा और प्रकाश' (टालस्टाय), 'शारदीया' (जगदीश चन्द्र माथुर), 'आषाढ़ का एक दिन', 'आधे-अधूरे' (मोहन राकेश), 'अंधायुग' (धर्मवीर भारती), 'बिच्छू और कंजूस' (मोलियर), 'किंग लियर' (शेक्सपियर), 'मुहम्मद तुगलक' (गिरीश कर्नाड), 'सूर्यमुखी' (लक्ष्मीनारायण लाल), 'हानूश', 'माधवी' (भीष्म साहनी), 'रस गंधर्व' (मणि मधुकर), 'घासीराम कोतवाल', 'सखाराम बाइन्डर', 'खामोश अदालत जारी है', (विजय तेन्दुलकर), 'ताजमहल का टेंडर' (अजय शुक्ला), 'भूख आग है' (कृष्ण बलदेव वैद) आदि।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के बारे में विद्वानों की अलग-अलग राय है — 'ब्रेक्तेरियर मिरर' के अभिताभ दास गुप्त का कथन है — "विद्यालय का वातावरण इण्डियन है, भारतीय नहीं। नाटकों के चुनाव, प्रस्तुतीकरण, रिहर्सल तथा सम्पूर्ण व्यवहार में विदेशी प्रस्तुतियों की नकल मिलती है। उनका तर्क है कि - अधिकांश अध्यापक

मध्यम वर्ग से आए हैं; उनमें एम्बीशन है इसलिए वे पेटी बुर्जुआ का व्यवहार करने लगते हैं। अपनी झूठी गरिमा बनाए रखने के लिए वे विदेशी वातावरण तथा अंग्रेजी व्यवहार का पोषण करते हैं। मिस्टर गुप्ता ब.व. कारन्त के समय को भारतीय वातावरण का समय मानते हैं। उनका कहना है कि - निदेशक कारन्त के आने से स्कूल में भारतीय वातावरण आया था, जो एक सुखद बदलाव में मण्डित था। इन मतभेदों के बावजूद एन.एस.डी. का विशेष महत्त्व एवं पहचान है, जिसे हिन्दी रंगमंच ही नहीं, सम्पूर्ण भारतीय रंगमंच बहुत कुछ ग्रहण कर रहा है। इसने नाटकों की प्रस्तुतियों के मानक बनाए हैं। इस प्रकार यह विद्यालय नाट्य शिक्षा एवं प्रदर्शन में अनोखा संस्थान है।